# श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
## (केंद्रीय विश्वविद्यालय)
## बी-04, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016

## सत्यापन प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि एम.ए. हिन्दू अध्ययन में संचालित कक्षा के अनुसार सी.ओ., पी.ओ., पी.एस. ओ. एवं एल.ओ. का कार्य पूर्ण है।

विभागाध्यक्ष हस्ताक्षर

नाम: प्रो० शिवशंकर मि

दिनांक: 04/9/24

प्रो. शिवशंकर मिश्र
Prof. Shiv Shankar Mishra
विभागाध्यक्ष, हिन्दू अध्ययन विभाग
Head, Department of Hindu Studies
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
बी–४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi-110016

सत्यापित
VERIFIED

कुलसचिव / Registrar
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
बी–4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi-110016

# (M.A Hindu Studies

# (एम.ए हिन्दू अध्ययन)

## Programme Outcomes (POs), Programme Specific Outcomes (PSOs), Course Outcomes (COs)

# Programme Outcomes (POs) for M.A (Hindu Studies)

At the end of this 2 years Master Degree programme in M.A Hindu Studies, students will able to-

द्विवर्षीय हिन्दू अध्ययन स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अन्त में, छात्र-

**PO1: Critical Close Reading**- read critically the prescribed texts and understand its broader implications. This includes:

- read closely in a variety of forms, styles, structures, and modes.
- use various interpretative techniques.

**PO1**: **समीक्षात्मक गहन अध्ययन**- निर्धारित ग्रंथों को गंभीर रूप से पढ़ने की क्षमता और इसके व्यापक निहितार्थों को समझने की क्षमता। इसमें अंतर्निहित है:

- विभिन्न रूपों, शैलियों, संरचनाओं का गंभीर अध्ययन।
- विभिन्न व्याख्यात्मक तकनीकों का प्रयोग।

**PO2: Critical Thinking** -An ability to think critically on various issues and subject matters and relate the same with real life situations. This includes the ability to:

• synthesize and integrate knowledge.
• practice and develop argumentative skills.
• in-depth study of the subject matter.

**PO2**: **आलोचनात्मक चिन्तन -** विभिन्न मुद्दों और विषयों पर गंभीर रूप से चिन्तन और वास्तविक जीवन की स्थितियों से संबंधित करने की क्षमता। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं-

- ज्ञान का संश्लेषण और एकीकरण।
- तर्क कौशल का अभ्यास और विकास ।
- विषय वस्तु का गहन अध्ययन।

**PO3: Integration of Knowledge**-Demonstrate detailed knowledge in one or more disciplines and the ability to integrate knowledge across disciplinary boundaries. This includes the ability to:

- study the current state of knowledge.
- multi-disciplinary learning ability.
- show familiarity with works from other disciplines.

**PO3**: **ज्ञान का एकीकरण-** यह एक या एक से अधिक विषयों में विस्तृत ज्ञान और अनुशासनात्मक सीमाओं के ज्ञान को एकीकृत करने की क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं-

- ज्ञान की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करें।
- बहु-विषयक सीखने की क्षमता।
- अन्य विषयों के कार्यों से परिचित होना।

**PO4: Communication Skill** - Demonstrate the ability to extract and convey information accurately in a variety of formats. This includes: An ability to

adjust writing style appropriately to the content, the context, and nature of the subject.

- communicate both in writing & orally.
- read & write analytically.
- analytical skills to all situations.

**PO4: सम्प्रेषण कौशल** - यह विभिन्न स्वरूपों में जानकारी को सटीक रूप से निकालने और संप्रेषित करने की क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें विषय की सामग्री, संदर्भ और प्रकृति के लिए लेखन शैली को उचित रूप से समायोजित करने की क्षमता शामिल हैं।

- लिखित और मौखिक उभय विध संवाद।
- स्पष्ट रूप से और प्रभावी ढंग से लिखना, लेखन को अनुकूलित करना
- सभी स्थितियों के लिए विश्लेषणात्मक कौशल।

**PO5: Research Aptitude** - Development of a spirit of critical and scholarly enquiry for the subject. This includes:

- identify and evaluate appropriate research sources.
- incorporate sources into documented academic writing.
- formulate original arguments in response to those sources.
- apply appropriate research methodologies to specific problems.

**PO5: अनुसंधान अभिक्षमता** - किसी भी विषय के लिए आलोचनात्मक और विद्वतापूर्ण अन्वेषण की भावना का विकास। इसमें शामिल है-

- उपयुक्त अनुसंधान स्रोतों की पहचान और मूल्यांकन करना।
- प्रलेखित अकादमिक लेखन में स्रोतों को शामिल करना।
- उन स्रोतों के प्रत्युत्तर में मूल तर्क तैयार करना।
- विशिष्ट समस्याओं के लिए उपयुक्त शोध पद्धतियों को लागू करना।

**PO6: Role as a Global Citizen-** A critical understanding about the ways of the world and realization of one's role within communities to effect change. This includes the ability to:

- espect other feelings & thoughts irrespection of place.
- Demonstrate interconnectedness among people, societies & enviornment arond the globe.

**PO6: एक वैश्विक नागरिक के रूप में भूमिका**- वैश्विक प्रणालियों का आलोचनात्मक बोध और सम्बन्धित परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए समुदायों में अपनी भूमिका का निर्वहण। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं:

- स्थान आदि की परवाह किये बिना दूसरों की भावनाओं और विचारों का सम्मान।
- विश्व के लोगों, समाजों और पपर्यावरण के बीच परस्पर जुडाव का प्रदर्शन ।

**PO7: Understanding of Indian Knowledge Tradition -** discussion of classical knowledge promoted by Rishis and Acharyas in India. This includes:

• introduction to India's holistic thinking tradition.
• knowledge of Indian sciences.
• understanding of Hindu way of life, Hindu culture and Hindu thoughts.

- A gradual introduction to the arts developed in India.

**PO7:भारतीय ज्ञान परम्परा का अवबोध-**भारत में ऋषियों एवं आचार्यों द्वारा प्रवर्तित शास्त्रीय ज्ञान सम्पदा का विमर्श। इसमें सम्मिलित हैं-

- भारत की समग्र चिन्तन परम्परा का परिचय।
- भारतीय विद्याओं का परिज्ञान।
- हिन्दू जीवन पद्धति, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दू चिन्तन का अवबोध।
- भारत में विकसित कलाओं का क्रमिक परिचय।

**PO8: Persuasion of Hindu Philosophy and Culture** - A specific study of the way of life, customs and traditions described in Hinduism. It includes-

• fundamentals of Hindu culture.
• tattvamimansa and gyaanmimansa of Indian philosophy.
• hindu lifestyle ethics.
• global vision of Hindu thoughts.

**PO8: हिन्दू दर्शन एवं संस्कृति का अनुशीलन**- हिन्दू धर्म में वर्णित जीवन पद्धति रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं का विशिष्ट अध्ययन। इसमें सम्मिलित है-

- हिन्दू संस्कृति के मूलस्त्रोत।
- भारतीय दर्शन की तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा।
- हिन्दू जीवन शैली आचार मीमांसा।
- हिन्दू चिन्तन की वैश्विक दृष्टि

# Programme Specific Outcomes (PSOs)

At the end of this 2 years Master Degree programme in Hindu Stuides, students will able to-

द्विवर्षीय हिन्दू अध्ययन स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अन्त में, छात्र-

**PSO1-**संस्कृत भाषा के विविध व्याकरणिक पदों का वाक्यों में शुद्ध रूप से प्रयोग कर सकेगा या व्याकरणिक पदों का विश्लेषण सहित प्रयोग कर सकेगा।

**PSO2-**प्रमाण सिद्धान्त का प्राकृतिक विज्ञान तथा विविध शास्त्रों में निहित प्रयोगों का वर्णन या व्याख्या कर सकेगा।

**PSO3-**शास्त्रों के शिक्षण में तत्त्वनिरूपणार्थ वर्णित वादपरम्परा एवं तन्त्रयुक्तियों की व्याख्या कर सकेगा।

**PSO4-**जैन, बौद्ध, सिक्ख तथा भारतीय परम्परा में निहित तत्वों की समीक्षा कर सकेगा।

**PSO5-**वैदिक ग्रन्थ एवं वैदिक परम्परा में निहित एकत्व के सिद्धान्त के विषयों का प्रतिपादन कर सकेगा।

**PSO6-** वैदिक बौद्ध, जैन सिक्ख परम्पराओं में निहित अवधारणाओं का प्रतिपादन कर सकेगा।

**PSO7-** विविध परम्पराओं के सिद्धान्त एवं उनमें निहित प्रत्ययों का वर्णन/ व्याख्या कर सकेगा।

**PSO8-** शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त एवं छन्द -वेदांगो के स्वरूप एवं उनमे निहित तत्वों की व्याख्या कर सकेगा।

**PSO9-** प्राकृत भाषा के मुख्य व्याकरणिक पदों तथा जैन दर्शन में निहित तत्वों का वर्णन/प्रतिपादन कर सकेगा।

**PSO10-**पालि भाषा के मुख्य व्याकरणिक पदों तथा बौद्ध दर्शन में निहित तत्वों का वर्णन/प्रतिपादन कर सकेगा।

**PSO11-**पुनर्जन्म,बन्धन एवं मोक्ष की अवधारणा की समीक्षा कर सकेगा।

**PSO12-**रामायण के पाठ निर्धारण एवं वैश्विक स्वरूप की विवेचना कर सकेगा।

**PSO13-**भारतीय नीतिशास्त्र के मुख्य स्म्प्रत्ययों का प्रतिपादन कर सकेगा।

**PSO14-**नाट्यशास्त्र स्वरूप एवं मुख्य तत्वों की व्याख्या/ वर्णन कर सकेगा।

**PSO15-**पुराणों के लक्षण,तत्व एवं कतिपय स्त्री एवं पुरुष चरित्रों का उदाहरण सहित व्याख्या/प्रतिपादन कर सकेगा।

**PSO16-**महाभारत में निहित विविध धर्म,संसार, साहित्य, कला एवं नीति सम्बन्धित विविध प्रसंगों की समीक्षा का सकेगा

**PSO17-**विमर्श की पारम्परिक एवं पाश्चात्य प्रविधि की समीक्षा कर सकेगा।

**PSO18-**भारतीय मन्दिर स्थापत्य के विकास, विशेषताओं एवं मुख्य शैलियों को चिन्हित/ व्याख्या कर सकेगा।

**PSO19-** पाणिनीय भाषा विज्ञान एवं पाश्चात्य भाषा विज्ञान का विश्लेषण एवं समीकरण कर सकेगा

**PSO20-** भारतीय कला, सौंदर्य, स्थापत्य एवं मूर्तिकला की मौलिक अवधारणा एवं शास्त्रीय विश्लेषण कर सकेगा।

**PSO1**-use various grammatical terms of the Sanskrit language correctly in sentences with analysis.

**PSO2**- explain praman siddhanta's prakrit vijyan and experiments contained in various disciplines.

**PSO3-** explain the vaad parmpra and tantrayukti methods described in the the scriptures.

**PSO4-** review elements contained in Jain, Buddhist, Sikh and Indian traditions.

**PSO5-** render the themes of the principle of unity contained in the Vedic tradition and Vedic texts.

**PSO6-** render concepts rooted in Vedic, Buddhist, Jain & Sikh traditions.

**PSO7-** explain the principles of various traditions and the concepts inherent in them.

**PSO8-** explain the nature of Vedanga (Siksha, Vykaran, Nirukta and Chhand) and the elements contained in them.

**PSO9-** describe the main grammatical terms of Prakrit language and the elements contained in Jain philosophy.

**PSO10-** describe the main grammatical terms of the Pali language and the elements contained in Buddhist philosophy.

**PSO11-**review the concept of Puranjanam, Bandhan and Moksha.

**PSO12-** discuss the text determination and global nature of Ramayana.

**PSO13-**present the main concepts of Indian Nitishashtra.

**PSO14-**explain the nature and main elements of Natyashastra.

**PSO15-**explain Characteristics of some female and male characters, elements of the Puranas with examples.

**PSO16-** review various topics related to different religion, world, literature, art and policy contained in Mahabharata

**PSO**17 -review the traditional and western method of discourse.

**PSO18-** identify the development, characteristics and main styles of Indian temple architecture.

**PSO**19- analyze and review Panini linguistics and Western linguistics.

**PSO**20- analyze basic and classical concepts of Indian art, beauty, architecture and sculpture.

# Course Outcomes
# (कोर्स परिणाम)

At the end of this /2 years Master Degree programme in Hindu Studies, students will able to-

द्विवर्षीय हिन्दू अध्ययन स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अन्त में, छात्र-

## प्रथम सत्र

| Course<br>कोर्स | Course Outcomes<br>कोर्स परिणाम। |
|---|---|
| **कोर्स-1**<br>**संस्कृताध्ययन के उद्देश्य एवं प्रयोजन** | $CO_1$- संस्कृत व्याकरण का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेगा।<br>CO2- विभक्ति एवं कारक का परिज्ञान हो सकेगा<br>CO3- शब्द रूप एवं धातु रूप का परिचय एवं अभ्यास हो सकेगा<br>CO4- वाच्य, प्रत्यय, अव्यय, उपसर्ग, विशेष्य-विशेषण संबंध आदि का प्रयोग कर सकेगा।<br>CO5- संस्कृत शब्दावलियों का पाश्चात्य अवधारणाओं से विरोधाभास का विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO6- संस्कृत पाठ्यांशो के अध्ययन से संस्कृत भाषा के पठन एवं लेखन में दक्षता प्राप्त हो सकेगी।<br>CO1- get a general introduction to Sanskrit grammar.<br>CO2- known Vibhakti & Karak.<br>CO3- introduce and practice Shavad roop & Dhatoo roop.<br>CO4 - use Vaachya , Pratyay, avyaya, upsarga, Visheshya-visheshan relationship.<br>CO5- Analyze the contrast of Sanskrit terminology with western concepts.<br>CO6- get proficiency, in reading and writing of Sanskrit language by studying Sanskrit texts. |
| **कोर्स-2**<br>**प्रमाणसिद्धान्त** | $CO_1$- प्रमाणसिद्धांत की उत्पत्ति, प्रयोजन एवं परिभाषा का परिज्ञान हो सकेगा।<br>CO2- शब्दशक्ति एवं शक्तिग्रहोपाय का विश्लेषण कर अर्थ निर्धारण में समर्थ हो सकेगा।<br>CO3- प्रमाणों का वैविध्य ज्ञात कर उनका प्रयोग कर सकेगा।<br>CO4- प्रमाणों की परस्पर पूरकता का विमर्श कर सकेगा।<br>CO5- समकालीन ग्रंथों के अध्ययन में प्रमाणों का प्रयोग कर सकेगा।<br>CO1-understand the origin, purpose and definition of Pramansiddhanta.<br>CO2- determine the meaning by analyzing the shabdashakti and shaktigrahopaya.<br>CO3-use diversity of the praman by knowing them.<br>CO4-discuss the mutual complementarity of the pramanas.<br>CO5-use praman in the study of contemporary texts. |
| **कोर्स-3**<br>**वाद परम्परा तथा उनकी संस्थायें** | $CO_1$- शास्त्रार्थ विधि का परिज्ञान हो सकेगा।<br>CO2- वादपरम्परा का परिचय एवं उसके भेदों का विवेचन कर सकेगा।<br>CO3- सूत्र, वृत्ति, टीका, टिप्पणी की परिभाषा से अवगत हो सकेगा ।<br>CO4- अर्थ निर्धारण की प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त कर अर्थ निर्धारण में सक्षम हो सकेगा।<br>CO5-विभिन्न ज्ञान परम्पराओं में तंत्रयुक्ति के प्रयोग का विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO6-नैयायिक प्रक्रिया द्वारा समस्या से निर्णय तक की प्रक्रिया का आकलन कर सकेगा।<br>CO1 - understand shastraarth vidhi. |

| | |
|---|---|
| | CO2- introduce the Vaadparmpra and interpret its differences.<br>CO3- know the defination of Sutra, Vritti, teeka & tippani.<br>CO4- determine the meaning of Pravidhi's by knowing them.<br>CO5 - analyze the use of Tantrayukti in different traditions.<br>CO6 -assess the process from problem to decision by judgmental process. |
| **कोर्स-4**<br>**तत्वविमर्श** | CO1- हिन्दू वाद के मूल स्त्रोत एवं इतिह्य परिज्ञात हो सकेगा।<br>CO2- हिन्दू शब्द की उत्पत्ति एवं भौगोलिक विवेचन करने में समर्थ हो सकेगा।<br>CO3- पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों की दृष्टि में हिंदू शब्द की समीक्षा कर सकेगा ।<br>CO4- अष्टादश विद्याओं का परिचय एवं विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO5- स्त्री विषयक विभिन्न मतों की समीक्षा कर सकेगा।<br>CO6- भारतीय परंपरा में वर्णित पदार्थ तत्वों की विवेचना कर सकेगा।<br>CO7- आत्म परिचय के उपनिषद संबंधी सिद्धांत की समीक्षा कर सकेगा।<br>CO1- known the original source and history of the Hinduvaad.<br>CO2- explain the origin and geographical origin of the word Hindu.<br>CO3 - review the word Hindu in the terms of Western and Indian scholars.<br>CO4- introduce and analyze Ashtadash Vidyas.<br>CO5- review various opinions on Streevimarsha.<br>CO6- analyse the tatva discribed in Indian tradition discuss the elements.<br>CO7-review the Upanishad theory of self-introduction. |
| **कोर्स-5**<br>**वेदों का परिचय** | CO1- वैदिक वांग्मय का परिज्ञान कर सकेगा।<br>CO2- मन्त्र उच्चारण एवं अर्थ संरक्षण के नियम का अनुपालन कर सकेगा।<br>CO3- वेदांगों का परिचय प्राप्त कर सकेगा।<br>CO4- वैदिक परंपरा के विभिन्न सिद्धांतों का परिचय एवं विवेचन कर सकेगा।<br>CO5- वर्ण, जाति एवं कास्ट की तुलना कर सकेगा।<br>CO1- understand Vedic Vaangmaya.<br>CO2- learn Mantra pronunciation & follow rules arthsanrakshan.<br>CO3- get the introduction of Vedangas.<br>CO4- introduce and discuss various principles of Vedic tradition.<br>CO5 -compare varna, jaati and caste. |

# द्वितीय सत्र

| Course<br>कोर्स | Course Outcomes<br>कोर्स परिणाम। |
|---|---|
| **कोर्स-1**<br>**धर्म और कर्म विमर्श** | $CO_1$- धर्म की शास्त्रीय परिभाषा का परिचय प्राप्त होगा।<br>CO2- वैदिक ग्रन्थों, जैन, बौद्ध एवं सिख परम्परा में धर्म की व्याख्या एवं विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO3- विश्वास एवं उपासना में धर्म की प्रधानता को परिभाषित कर सकेगा<br>CO4- धर्म, रिलीजन, पथ और महजब के मध्य अंतर स्पष्ट कर सकेगा<br>CO5- कर्म की परिभाषा समझकर सकाम एवं निष्काम कर्म के विवेचना कर सकेगा।<br>CO1- understhand the classical definition of religion.<br>CO2- explain and analyze religion in Vedic texts, Jain, Buddhist and Sikh traditions.<br>CO3- define the primacy of religion in faith and worship.<br>CO4- differentiate between dhrama, religion, path and Mahjab<br>CO5- interpret skaam & nishkam karma by knowing definition of karma. |
| **कोर्स-2**<br>**वैदिक परम्परा के सिद्धान्त** | $CO_1$- वैदिक परंपरा के आधारभूत तत्वों का परिचय प्राप्त कर सकेगा।<br>CO2- निगम और आगम के मध्य अंत:संबंध का मूल्यांकन कर सकेगा।<br>CO3- यज्ञ विषयक समस्त पक्षों का विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO4- यज्ञों के परिणाम की विवेचना कर सकेगा।<br>CO5- देवतत्व की अवधारणा की तर्क सम्मत व्याख्या कर सकेगा।<br>CO1- get an introduction to the basic elements of the Vedic tradition.<br>CO2 - Evaluate the interrelationship between the Aagam &Nigam<br>CO3- analyze all the aspects related to Yagya.<br>CO4- discuss the result of Yagyas.<br>CO5- explain the logical-concept of Devtatva. |
| **कोर्स-3**<br>**वेदांग (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द)** | $CO_1$- शिक्षा ग्रंथों का परिचय प्राप्त कर सकेगा<br>CO2- वर्ण उच्चारण में शिक्षा के नियमों का प्रयोग कर सकेगा<br>CO3- व्याकरण शास्त्र का प्रयोजन एवं परंपरा जान सकेगा<br>CO4- प्रकृति-प्रत्यय का विवेचन कर सकेगा।<br>CO5-निरुक्त शास्त्र का परिचय एवं उपयोगिता से अवगत हो सकेगा।<br>CO6-छंद शास्त्र का ज्ञान कर उसकी तर्क सम्मत व्याख्या कर सकेगा<br>CO1- to get an introduction to Shiksha texts.<br>CO2 - use the rules of Shiksha in Varn pronunciation<br>CO3- know the purpose and tradition of Vyakarna Shastra.<br>CO4- explain the Prakrti-Pratayya.<br>CO5- known Nirukta Shastra and utility of it.<br>CO6 - known chanda shasra and explain it logically |
| **कोर्स-4**<br>**प्राकृत भाषा एवं जैन दर्शन** | $CO_1$- प्राकृत भाषा की उत्पत्ति एवं परिभाषा से परिचित हो सकेगा।<br>CO2- प्राकृत व्याकरण का परिचय हो सकेगा।<br>CO3- जैन तीर्थंकरों के ऐतिह्य तथा उनके योगदान की विवेचना कर सकेगा।<br>CO4- जैन तत्वमीमांसा की समीक्षा कर सकेगा।<br>CO5-सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र तथा सम्यक् ज्ञान की तर्कसंगत व्याख्या कर सकेगा।<br>CO1- know the origin and definition of Prakrit language<br>CO2- know the Prakrit grammar.<br>CO3- discuss the Jain Tirthankara's history and contribution of them. |

| | |
|---|---|
| | CO4- review Jain Tatvamimansa<br>CO5 - explain Samyak Darshan, Samyak Chritra &Samyak Gyan. |
| **कोर्स-5**<br>**पालि भाषा एवं बौद्ध दर्शन** | $CO_1$- पालि व्याकरण का परिज्ञान कर सकेगा<br>$CO_2$- बौद्ध सिद्धांतों के परिभाषिक पदों का परिचय प्राप्त कर सकेगा ।<br>$CO_3$- बौद्ध की मौलिक शिक्षाओं की तार्किक एवं व्यावहारिक व्याख्या कर सकेगा।<br>$CO_4$- बौद्ध के चारों संप्रदायों के सिद्धांतों की विवेचना करने में समर्थ होगा।<br>$CO_5$- बौद्ध दर्शन के विचारों का विश्लेषण कर सकेगा।<br>$CO_1$- understand Pali grammar<br>$CO_2$ - Get an introduction to the definitional terms of Buddhist principles.<br>$CO_3$- able to give a logical and practical explanation of the fundamental teachings of Buddhism.<br>$CO_4$-able to discuss the principles of the four communities of Buddhism.<br>$CO_5$- able to analyze the ideas of Buddhist philosophy. |

# तृतीय सत्र

| Course<br>कोर्स | Course Outcomes<br>कोर्स परिणाम। |
|---|---|
| कोर्स-1<br>पुर्नजन्म बन्धन मोक्षविमर्श | CO1- पुनर्जन्म के सिद्धांत को समझ सकेगा।<br>CO2- बन्धन एवं मोक्ष की अवधारणा स्पष्ट कर सकेगा।<br>CO3- बन्धन के मूल कारण का मूल्यांकन कर सकेगा।<br>CO4- मोक्ष के स्वरूप का विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO5- मोक्ष प्राप्ति के उपाय की विवेचना कर सकेगा।<br>CO6-मोक्ष के विभिन्न मार्गों की तर्क सम्मत व्याख्या कर सकेगा।<br>CO1- able to understand the principle of rebirth.<br>CO2- explain the concept of bandhan and moksha.<br>CO3- Evaluate the causes of bandhan.<br>CO4- analyze the nature of moksha.<br>CO5- discuss the ways to attain moksha.<br>CO6- explain the various paths to moksha. |
| कोर्स-2<br>रामायण | CO1- रामायण की कथावस्तु एवं महिमा का परिज्ञान कर सकेगा।<br>CO2- रामकथा के वैदिक आधार का विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO3- भारत तथा विदेशों में चर्चित रामकथा की तुलनात्मक विवेचना कर सकेगा।<br>CO4- रामायण की लोकप्रियता एवं प्रासंगिकता की विवेचना कर सकेगा।<br>CO5- विभिन्न रामायण ग्रंथों की तुलना कर सकेगा।<br>CO6-रामायण में मानव तथा प्रकृति संबंध का मूल्यांकन कर सकेगा।<br>CO7-समाज में ऋषियों की भूमिकाओं का विवेचन कर सकेगा।<br>CO8- रामायण में स्त्रियों का विमर्श कर सकेगा।<br>CO1- understand the story and glory of Ramayana.<br>CO2- analyze the Ramkatha on Vedic basis.<br>CO3- to do comparative analysis of Ram Katha in India and abroad.<br>CO4- discuss the popularity and relevance of Ramayana.<br>CO5- compare different Ramayana texts.<br>CO6- evaluate the human and nature relationship in Ramayana.<br>CO7 -discuss the roles of sages in society.<br>CO8-do in feminism Ramayana. |
| कोर्स-3<br>भारतीय नीतिशास्त्र | CO1- आचार शास्त्र के इतिहास और स्वरूप को समझ सकेगा।<br>CO2- नैतिक चेतना का विकास कर सकेगा।<br>CO3- नैतिक शिक्षा के विविधरूपों का परिज्ञान कर सकेगा।<br>CO4- ऋण की अवधारणा स्पष्ट हो सकेगी।<br>CO5-पुरुषार्थ चतुष्टय, धर्म स्वातंत्र्य , संकल्प स्वातंत्र्य एवं कर्तव्यवाद की विवेचना कर सकेगा।<br>CO1- understand the history and nature of ethics.<br>CO2- develop moral consciousness.<br>CO3- understand the various forms of moral education.<br>CO4- clear the concept of Rin.<br>CO5-explain Purushartha Chaturtaya, dharma swatantarya, sankalap swatantarya & kartvyavaad. |
| कोर्स-4<br>नाट्य | CO1- भरतमुनि के नाट्य शास्त्र का परिचय एवं महत्व ज्ञात हो सकेगा ।<br>CO2- नाट्य का उद्भव एवं विकास का परिज्ञान कर सकेगा<br>CO3- करण, अंगहार, रस, भाव, अभिनय आदि लोकोपयोगी विषयों की विवेचन कर सकेगा।<br>CO4- दशरूपक और अठारह उपरूपकों की आलोचना कर सकेगा। |

| | |
|---|---|
| | CO5-संस्कृत नाटक का संक्षिप्त इतिवृत तक प्रस्तुत कर सकेगा।<br>CO6-भारतीय लोक रंगमंच की परंपरा को उपस्थापित कर सकेगा।<br>O1- known the introduction and importance of the Natya Shastra of Bharatmuni .<br>CO2 - understand the origin and development of Natya .<br>CO3- discuss important subjects in social scenario like:Karan, Angahar, Rasa, Bhava, Abhinaya etc<br>CO4 - criticize the dashroopak and eighteen uproopak.<br>CO5 - present iitvrit of Sanskrit drama.<br>CO6 - establish the tradition of Indian folk theatre. |
| **कोर्स-5**<br>**पुराणपरिचय** | $CO_1$- पुराणों का परिचय एवं उसकी कालस्थिति का परिज्ञान हो सकेगा<br>$CO_2$- पुराण लक्षण एवं पौराणिक संस्कृति की विवेचना कर सकेगा<br>$CO_3$- आख्यान एवं उपाख्यान का अंतर स्पष्ट हो सकेगा<br>$CO_4$- पौराणिक ऋषियों एवं ऋषिकाओं के जीवन से अवगत हो सकेगा<br>$CO_5$- पुराणों में वर्णित पुरुष पात्रों एवं स्त्री पात्रों के चरित्र का विश्लेषण कर सकेगा<br>$CO_6$-अरण्य,पुरियाँ ,तीर्थस्थल, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ एवं सप्तद्वीप के वैशिष्ट की विवेचना कर सकेगा<br>$CO_1$- understood introduction of Puranas and its time status.<br>$CO_2$- explain characteristics of purana's and pauranik culture.<br>$CO_3$- clear difference between Aakhyan and upakhyan.<br>$CO_4$- know the life of pauranik sages and sages<br>$CO_5$- analyze the character of male and female described in Puranas.<br>$CO_6$- explain significance of Aranya, Puri, teertha sthala, Dwadash Jyotirlinga, Shaktipeeth and Saptadvipa. |

# चतुर्थ सत्र

| Course<br>कोर्स | Course Outcomes<br>कोर्स परिणाम। |
|---|---|
| **कोर्स-1**<br>**महाभारत** | CO1- महाभारत की कथावस्तु एवं महत्व महत्व का परिज्ञान हो सकेगा।<br>CO2- महाभारत के रचना काल की तार्किक समीक्षा कर सकेगा।<br>CO3- विक्रम संवत की विवेचना कर सकेगा।<br>CO4- धर्म के 10 लक्षणों का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेगा।<br>CO5- साहित्य कला और संस्कृति के उपजीव्य के रूप में महाभारत की समीक्षा कर सकेगा ।<br>CO6-श्रीमद्भगवद्गीता एवं विदुर नीति का ज्ञान एवं विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO1- understand the story and importance of Mahabharata .<br>CO2- logically review the period of Mahabharata.<br>CO3- discuss the Vikram Samvat.<br>CO4- present examples of 10 characteristics of Dharma.<br>CO5- review the Mahabharata as Upjeevya of art and culture.<br>CO6- Know and analys Shrimad Bhagavad Gita and Vidur Niti. |
| **कोर्स-2**<br>**विमर्श की पाश्चात्य प्रविधि** | CO1- पारंपरिक विधियों का परिचय हो सकेगा।<br>CO2- मार्क्सवाद एवं समीक्षावादी चिंतन से अवगत हो सकेगा।<br>CO3- संरचनावाद के संबंध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो सकेगा।<br>CO4- भारतीय ज्ञान तन्त्र की आलोचना कर सकेगा।<br>CO5- भारतीय प्राविधियों का उपयोग कर समकालीन पाठों का विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO1- introduce conventional methods.<br>CO2 -understand Marxism and critical thinking.<br>CO3-develope scientific approach regarding structuralism.<br>CO4- criticize the Indian knowledge system.<br>CO5 - Analyze contemporary lessons using Indian techniques. |
| **कोर्स-3**<br>**भारतीय स्थापत्य** | CO1- भारतीय स्थापत्य के उद्गम और विकास का परिज्ञान हो सकेगा।<br>CO2- देवालय एवं देव प्रतिमा का आगम की दृष्टि से विश्लेषण कर सकेगा।<br>CO3- मंदिर स्थापत्य के उद्गम और विकास के शास्त्रीय स्वरुप से अवगत हो सकेगा।<br>CO4- गुप्तकालीन मंदिरों के वैशिष्ट्य को रेखांकित कर सकेगा।<br>CO5- उत्तर भारत के मंदिरों एवं दक्षिण भारत के मंदिरों की विशेषताओं का विवेचन कर सकेगा।<br>CO6 - आश्रम, विद्यास्थान, धर्मशास्त्र एवं आवास की शास्त्रीय स्वरुप को स्पष्ट कर सकेगा।<br>CO1- understand the origin and development of Indian architecture d.<br>CO2 - analyze the temple and the idol of God in term of Agam.<br>CO3- get acquainted with the classical form of origin and development of temple architecture.<br>CO4- underline the specialty of the Gupta period temples.<br>CO5- discuss the characteristics of the temples of North India and the temples of South India.<br>CO6 - explain the classical nature of Ashram, Vidyasthan, Dharmashastra and residence.. |
| **कोर्स-4**<br>**पाणिनीय एवं पाश्चात्य भाषाविज्ञान** | CO1- पाणिनीय भाषाविज्ञान एवं पाणिनि से पूर्व व्याकरण का सम्यक परिज्ञान कर सकेगा।<br>CO2 - पाणिनीय भाषाविज्ञान का अनुप्रयोग कर सकेगा।<br>CO3- वृति एवं शाब्दबोध की अवधारणा स्पष्ट होगी।<br>CO4- शब्दबोध के सिद्धान्त में अपेक्षित आकांक्षा, योग्यता सन्निधि का प्रयोग वाक्यसंरचना में कर सकेगा। |

| | |
|---|---|
| | CO5-पाश्चात्य भाषाविज्ञान एवं पाणिनीय भाषाविज्ञान की तुलना कर सकेगा।<br>CO1- understand linguistics and grammar before Panini.<br>CO2 - apply Paninian linguistics.<br>CO3- clear concept of variti and Shabdabodha.<br>CO4- use aakanksha, abilityYogyta & sannidhi expected in sentences.<br>CO5- compare Western Linguistics and Panini Linguistics. |
| **कोर्स-5**<br>**भारतीय कला** | CO1-भारतीय चिन्तन कला के महत्त्व का परिज्ञान हो सकेगा।<br>CO2 -कला के अध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा।<br>CO3-सौन्दर्य की भारतीय अवधारणा का अवबोध होगा।<br>CO4-गायन,वादन ,नर्तन आदि कालाओं का परिज्ञान एवं अनुप्रयोग कर सकेगा।<br>CO5-कला का आन्तरिक स्वरूप स्पष्ट होगा तथा वर्तमान कला के क्षेत्र में उसका समायोजन कर सकेगा।<br>CO1- understand the importance of Indian thought art.<br>CO2- clear the concept of adhyatmik, adhidaivik and adhibhautik forms.<br>CO3 - understand the concept of Indian beauty.<br>CO4 - understand and apply Singing, playing, dancing etc.<br>CO5 - clear the internal nature of art and adjust it in the field of current art. |

# अधिगमपरिणामा:

**पीठम्- आधुनिकविषय:** **विभाग:-**
**हिन्दू अध्ययनम्**
**कक्षा- एम.ए.हिन्दू-अध्ययनम् (प्रथमसत्रम्)**

**प्रथमपत्रम्- संस्कृत परिचय**

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • दैनिकप्रयोगदृष्ट्या आधारभूतशब्दरूपप्रक्रियाया: अवबोध: ।<br>• संस्कृतशब्दरूपधातुरूपाणामभ्यास:।<br>• संस्कृतभाषाया: प्रारम्भिकं कार्यसाधकज्ञानसृजनम्।<br><br>• दैनिक उपयोग के परिप्रेक्ष्य से मूल शब्द निर्माण प्रक्रिया को समझना।<br>• संस्कृत शब्द रूपों और धातु रूपों का अभ्यास।<br>• संस्कृत भाषा के प्रारंभिक कार्यात्मक ज्ञान का निर्माण। |
| 2. | • संस्कृतव्याकरणपरिचय:।<br>• भारतीयभाषासु शब्दव्युत्पत्तिपरिज्ञानम्।<br>• प्राचीनसंस्कृतग्रन्थान् यथार्थसन्दर्भे अवगन्तुं क्षमतानिर्माणम् ।<br><br>• संस्कृत व्याकरण का परिचय ।<br>• भारतीय भाषाओं में शब्द व्युत्पत्ति का ज्ञान।<br>• प्राचीन संस्कृत ग्रंथों को वास्तविक संदर्भ में समझने की क्षमता का निर्माण । |
| 3. | • पाश्चात्यसंकल्पनाभिः सह संस्कृतशब्दाबलिनां विरोधाभासविश्लेषणसामर्थ्य:।<br>• हिन्दूधर्म-एवं-पाश्चात्यावधारणापरिज्ञानम्।<br>• हिन्दूविचारधाराया: परिचय:।<br><br>• पाश्चात्य अवधारणाओं के साथ संस्कृत शब्दों के विरोधाभासों का विश्लेषण करने की क्षमता। |

| | |
|---|---|
| | • हिंदू धर्म और पश्चिमी अवधारणाओं का परिज्ञान।<br>• हिन्दू विचारधारा का परिचय । |
| 4. | • भाषाकौशलाभिवर्धनम्।<br>• संस्कृतभाषापठनलेखनदक्षता।<br>• पाठस्य भाषा, व्याकरणपक्षं च व्यापकरूपेण विश्लेषणक्षमताभिवर्धनम्।<br><br>• भाषा कौशल का अभिवर्धन।<br>• संस्कृत भाषा पठन एवं लेखन कौशल में दक्षता ।<br>• अध्ययन विषय की भाषा और व्याकरण संबंधी पहलुओं का व्यापक रूप से विश्लेषण करने की क्षमता । |

## द्वितीयपत्रम्- प्रमाण-सिद्धान्त

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • प्रमाणसिद्धान्तस्य परिज्ञानम्।<br>• शास्त्रविश्लेषणस्य भारतीयप्रारूपाधिगम:।<br>• प्राच्यपश्चात्यावधारणानुसारं प्रमाणशास्त्रस्य विश्लेषणम्।<br><br>• प्रमाण सिद्धांत का परिज्ञान।<br>• शास्त्रविश्लेषण के भारतीय प्रारूप का अधिग्रहण।<br>• प्राच्य एवं पश्चात्य अवधारणाओं के अनुसार प्रमाणशास्त्र का विश्लेषण। |
| 2. | • शब्दशक्तीनां परिज्ञानं प्रयोगश्च।<br>• शब्दस्य स्वरूपं तदभेदानां परिचय:।<br>• शब्दार्थानामवबोधने शक्तिग्रहणोपायाणां परिचय:।<br><br>• शब्दशक्तियों का परिज्ञान पहचान एवं उपयोग।<br>• शब्द के स्वरूप एवं उसके भेद का परिचय।<br>• शब्दार्थ अवबोधन में शक्तिग्रहण उपायों का परिचय। |
| 3. | • प्रमाणस्वरूपपरिचयः।<br>• प्रमाणवैविध्यतायाः परिज्ञानम्।<br>• प्रमाणवैविध्यतायाः विश्लेषणम्। |

| | |
|---|---|
| | • प्रमाण के स्वरूप का परिचय ।<br>• प्रमाण वैविध्य का परिज्ञान ।<br>• प्रमाण वैविध्य का विश्लेषण । |
| 4. | • प्रमाणां परस्परपूरकताविमर्श:।<br>• समकालीनग्रन्थाध्ययने प्रमाणां प्रयोग:।<br>• प्रमाणशास्त्रे अन्तर्दृष्टिविकसनम् ।<br><br>• प्रमाण पूरकता विमर्श<br>• समसामयिक ग्रंथों के अध्ययन में प्रमाण का उपयोग।<br>• प्रमाण शास्त्र में अंतर्दृष्टि का विकास । |

## तृतीयपत्रम्- वादपरम्परा तथा उनकी संस्थाएं; विकास और ज्ञान का सातत्य

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • शास्त्रार्थकौशलाभिवर्धनम्।<br>• कथाया: स्वरूपस्य प्रकारस्य च परिचय:।<br>• वादपरम्पराज्ञानसृजनम्।<br><br>• शास्त्रार्थ कौशल का अभिवर्धन।<br>• कथा के स्वरूप एवं प्रकार का परिचय।<br>• वादपरम्परा ज्ञान का सृजन। |
| 2. | • सूत्र-वृत्ति-टीका-टिप्पणी इत्यादिनां परिभाषावबोध: ।<br>• सूत्र-वृत्ति-टीका-टिप्पणी इत्यादिनां तुलनात्मकमाकलनम्।<br>• सूत्र-वृत्ति-टीका-टिप्पणी इत्यादिनां विवेचनक्षमता।<br><br>• सूत्र, वृत्ति, टिप्पणी, भाष्य आदि की परिभाषाओं का |

| | |
|---|---|
| | अवबोध।<br>• सूत्र, वृत्ति, टिप्पणी, भाष्य आदि तुलनात्मक मूल्यांकन।<br>• सूत्र, वृत्ति, टिप्पणी, भाष्य आदि की विवेचन क्षमता। |
| 3. | • अर्थनिर्धारणप्रविधिज्ञानार्जनम्।<br>• अर्थनिर्धारणक्षमता।<br>• ज्ञानस्य षड्विधतात्पर्यनियमविश्लेषणम्।<br><br>• अर्थ निर्धारण प्रविधि का ज्ञानार्जन।<br>• अर्थ निर्धारण क्षमता।<br>• ज्ञान के षड्विधतात्पर्यनियम का विश्लेषण। |
| 4. | • ज्ञानपरम्परासु तन्त्रयुक्तिप्रयोगविश्लेषणम्।।<br>• समकालीनसमस्यासु तन्त्रयुक्ते: प्रयोगविवेक:।<br>• नैयायिकप्रक्रियाया: बोध:।<br><br>• ज्ञान की परंपराओं में तंत्र युक्ति के उपयोग का विश्लेषण।<br>• समसामयिक समस्याओं में तंत्र के उपयोग विवेक।<br>• नैयायिक प्रक्रिया का बोध। |

## चतुर्थपत्रम्- तत्त्वविमर्श:

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • हिन्दूवादस्य मूलस्त्रोत-इतिह्यपरिज्ञानम्<br>• हिन्दूवादपरिप्रेक्ष्ये भारतीयचिन्तनम् एवं च पाश्चात्यविचारकचिन्तनम् उभयो: समीक्षा।<br>• अष्टादशविद्याविश्लेषणम्।<br><br>• हिंदू धर्म के मूल स्रोतों और इतिहास का ज्ञान<br>• हिंदू धर्म के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भारतीय चिन्तन एवं पाश्चात्य विचारक चिन्तन दोनों की समीक्षा।<br>• अष्टादशविद्या का विश्लेषण। |
| 2. | • स्त्रीविषयकविभिन्नमतानां विमर्श:।<br>• स्त्रीविषयकविभिन्नमतानां समीक्षा।<br>• विभिन्नपरम्परासु स्त्रीविषयकमतानां समानताया: ज्ञानम् । |

| | |
|---|---|
| | • स्त्रीविषयक विभिन्न मतों का विमर्श:।<br>• स्त्रीविषयक विभिन्न मतों की समीक्षा।<br>• विभिन्न परंपराओं में स्त्रीविषयक विभिन्न मतों की समानता का ज्ञान। |
| 3. | • भारतीयपरम्परायां वर्णितपदार्थतत्त्वविवेचनम् ।<br>• भारतीयपरम्परायां वर्णितात्मतत्त्वचिन्तनम् ।<br>• भारतीयपरम्परायां वर्णितपञ्चमहाभूतपरिज्ञानम्।<br><br>• भारतीय परंपरा में वर्णित पदार्थतत्त्व का विवेचन ।<br>• यह भारतीय परंपरा में वर्णित आत्मतत्त्व का चिंतन ।<br>• भारतीय परंपरा में वर्णित पञ्चमहाभूत का ज्ञान। |
| 4. | • आत्मपरिचयसिद्धान्तसमीक्षणम् ।<br>• अर्धनारीश्वरावधारणायाः चिन्तनम्।<br>• सम्प्रभुताया: सिद्धान्तानुसारमात्मानुशीलनम्।<br><br>• आत्मपरिचय सिद्धांत की समीक्षा।<br>• अर्धनारीश्वर की अवधारणा पर चिन्तन।<br>• संप्रभुता के सिद्धांत के अनुसार आत्म अनुशीलन। |

## पञ्चमपत्रम्- वेदों का परिचय

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • वैदिकवांग्मयस्य परिचय:।<br>• वैदिकवांग्मये निहितज्ञानस्य व्याख्याक्षमता।<br>• वेदानां पौरुषयेत्व- अपौरुषयेत्वविचारस्य विश्लेषणम्।<br><br>• वैदिकवांग्मय का परिचय।<br>• वैदिकवांग्मय में निहित ज्ञान की व्याख्या क्षमता।<br>• वेदों के पौरुषयेत्व- अपौरुषयेत्व विचार का विश्लेषणम्। |
| 2. | • वेदाङ्गानां परिचय:।<br>• मन्त्रोच्चारणाभ्यासः।<br>• अर्थसंरक्षणनियमानुपालनम्। |

| | |
|---|---|
| | • वेदाङ्गों का परिचय।<br>• मन्त्रोच्चारण अभ्यासः।<br>• अर्थसंरक्षण नियमों का अनुपालन। |
| 3. | • वैदिकपरम्पराया: विभिन्नसिद्धान्तानां परिचय:।<br>• वैदिकपरम्पराया: विभिन्नसिद्धान्तानां विवेचनम्।<br>• वैदिकपरम्परायां निहितैकत्वसिद्धान्तस्य विषयाणां प्रतिपादनम्।<br><br>• वैदिक परंपरा के विभिन्न सिद्धांतों का परिचय।<br>• वैदिक परंपरा के विभिन्न सिद्धांतों का विवेचन।<br>• वैदिक परम्परा में निहित एकतत्व सिद्धांत के उद्देश्यों की प्रस्तुति। |
| 4. | • वर्ण, जाति एवं कास्ट इत्येषां समीक्षा।<br>• सार्वभौमिकसमानताया: आकलनम्।<br>• वर्णव्यवस्थाया: परिज्ञानम्।<br><br>• वर्ण, जाति एवं कास्ट जैसे शब्दों की समीक्षा।<br>• सार्वभौमिक समानता का आकलन।<br>• जाति व्यवस्था का परिज्ञान। |

# एम.ए.हिन्दू-अध्ययनम् (द्वितीयसत्रम्)

## षष्ठमपत्रम्- धर्म एवं कर्म विमर्श

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • विविधग्रन्थेषु प्रतिपादित धर्मस्यशास्त्रीयपरिभाषाणाम् अवबोध:।<br>• धर्मनिरपेक्ष-एवं-आध्यात्मिकविचारधारानिर्माणम्।<br>• धर्ममूलकतत्त्वानां व्याख्या।<br><br>• विविध ग्रन्थे में प्रतिपादित धर्मशास्त्रीय परिभाषाओं का अवबोध।<br>• धर्मनिरपेक्ष-एवं-आध्यात्मिक विचारधारा का निर्माण।<br>• धर्ममूलक तत्त्वों की व्याख्या। |

| | |
|---|---|
| 2. | • विविधपरम्परासु प्रतिपादितधर्मपदस्य समीक्षा।<br>• धर्मस्य संघटनात्मकसिद्धान्तानां प्रतिपादनम्।<br>• समाजसमुदायसम्बन्धी विधिशास्त्रस्य परिज्ञानम्।<br><br>• विविधपरम्पराओं में प्रतिपादित धर्मपद की समीक्षा।<br>• धर्म के संघटनात्मक सिद्धान्तान का प्रतिपादन।<br>• समाज एवं समुदाय सम्बन्धी विधिशास्त्र का परिज्ञान। |
| 3. | • विश्वास-एवं-उपासनायां धर्मस्य प्रधानताया: ज्ञानम् ।<br>• विश्वास-एवं-उपासनायां धर्मस्य प्रधानताया: विश्लेषणम् ।<br>• धर्म, रिलीजन, पथ और महजब इत्येषां पदानां व्याख्या।<br><br>• विश्वास-एवं-उपासना में धर्म की प्रधानता का ज्ञान।<br>• विश्वास-एवं-उपासना में धर्म की प्रधानता का विश्लेषण।<br>• धर्म, रिलीजन, पथ और महजब जैसे पदों की व्याख्या। |
| 4. | • कर्मण: वैविध्ये भेदक्षमता।<br>• वास्तविकजीवने धर्मकर्मणो: पूरकत्वपरिज्ञानम्।<br>• धर्मान्तर्वगमनस्यसम्बन्धमहत्वपूर्णकौशलानां विकसनम्।<br><br>• कर्म के वैविध्य में भेद क्षमता।<br>• वास्तविक जीवन में धर्म और कर्म के पूरकत्व का परिज्ञान।<br>• धर्मानन्तर अवगमन सम्बन्धी महत्वपूर्ण कौशलों का विकास। |

## सप्तमपत्रम्- वैदिक परम्परा के सिद्धान्त

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|

| | |
|---|---|
| 1. | • वैदिकपरम्पराया: आधारभूततत्त्वानां परिज्ञानम्।<br>• वैदिकपरम्पराया: आधारभूततत्त्वानां विश्लेषणम्।<br>• निगमागमयो: अन्त: सम्बन्धस्य मूल्याङ्कनम्।<br><br>• वैदिक परम्परा के आधारभूत तत्त्वों का परिज्ञान।<br>• वैदिक परम्पराया के आधारभूत तत्त्वों का विश्लेषणम्।<br>• निगम निगगम के अन्त:सम्बन्ध का मूल्याङ्कन। |
| 2. | • यज्ञ-एवं-इष्टिविषयकज्ञानस्य सृजनम्।<br>• यज्ञ-एवं-इष्टिविषयकसमस्तपक्षानां विश्लेषणम्।<br>• शुभाशुभावधारणाया: मूल्याङ्कनम्।<br><br>• यज्ञ-एवं-इष्टि विषयक ज्ञान का सृजन।<br>• यज्ञ-एवं-इष्टि विषयक समस्त पक्षों का विश्लेषण।<br>• शुभाशुभावधारणा का मूल्याङ्कन। |
| 3. | • यज्ञपरिणामविवेचनम्।<br>• मीमांसाशास्त्रस्य अवबोध:।<br>• देवतत्वावधारणाया:तर्कसम्मतव्याख्या।<br><br>• यज्ञ के परिणामों का विवेचन।<br>• मीमांसाशास्त्र का अवबोध।<br>• देवतत्व अवधारणा की तर्कसम्मत व्याख्या। |
| 4. | • वेदानां सार्वभौमिकोपादेयताया: बोध: ।<br>• समसामयिकपरिप्रेक्ष्ये वेदेषु प्रतिपादितविषयाणां संश्लेषणम्।<br>• वेदेषु निहितविज्ञानस्य विश्लेषणम्।<br><br>• वेदों की सार्वभौमिक उपादेयता का बोध: ।<br>• समसामयिक परिप्रेक्ष्य में वेदों में प्रतिपादित विषयों का संश्लेषणम्।<br>• वेदों में निहित ज्ञान का विश्लेषण। |

## अष्टमपत्रम्- वेदांग- शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • शिक्षाग्रन्थानाम् अवबोध :।<br>• वर्णोच्चारणे शिक्षाया: नियमानां प्रयोगदक्षता।<br>• शिक्षावेदाङ्गस्य विवेचनक्षमता।<br><br>• शिक्षाग्रन्थों का अवबोध।<br>• वर्णोच्चारण में शिक्षा के नियमों की प्रयोग दक्षता।<br>• शिक्षा वेदाङ्ग विवेचन क्षमता। |
| 2. | • व्याकरणशास्त्रपरम्पराया: अवबोध:।<br>• व्याकरणशास्त्राभिमतं प्रकृतिप्रत्ययपदव्युत्पत्तिविवेचनक्षमता।<br>• व्याकरणशास्त्रस्य प्रयोजनानुगुणं तस्य प्रयोग:।<br><br>• व्याकरणशास्त्र परम्परा का अवबोध।<br>• व्याकरणशास्त्र अभिमत प्रकृति प्रत्यय पद व्युत्पत्ति विवेचन क्षमता।<br>• व्याकरणशास्त्र के प्रयोजन अनुगुण उसका प्रयोग। |
| 3. | • निरुक्तशास्त्रस्य अवबोध:।<br>• शब्दनिर्वचनम्-एवं-मन्त्रप्रकाराणां विश्लेषणम्।<br>• निरुक्तानुरूपं देवतास्वरूपचिन्तनम्।<br><br>• निरुक्तशास्त्र का अवबोध।<br>• शब्दनिर्वचन-एवं-मन्त्रप्रकारों का विश्लेषणम्।<br>• निरुक्तानुरूप देवतस्वरूप का चिन्तन। |
| 4. | • वैदिकलौकिकच्छन्दस्वरूपावबोध: ।<br>• वार्णिकमात्रिकच्छन्दविवेचनम् ।<br>• छन्दशास्त्रस्य ज्ञानप्राप्य तस्य तर्कसम्मतव्याख्या प्रयोगश्च ।<br><br>• वैदिक एवं लौकिक छन्द के स्वरूपों का अवबोध।<br>• वार्णिक एवं मात्रिक छन्दों का विवेचन।<br>• छन्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर तर्कसम्मत व्याख्या और प्रयोग। |

## नवमपत्रम्- प्राकृत भाषा एवं जैन दर्शन

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • प्राकृतभाषाया: आधारभूततत्त्वानामवबोध: ।<br>• स्तरानुगुणं प्राकृतभाषाया: परिज्ञानम्।<br>• वैदिकसाहित्ये एवं च आधुनिकभाषासु प्राकृतभाषाया: योगदानस्य विश्लेषणम्।<br><br>• प्राकृत भाषा के आधारभूत तत्त्वों का अवबोध ।<br>• स्तरानुगुण प्राकृत भाषा का परिज्ञान।<br>• वैदिकसाहित्य एवं आधुनिक भाषाओं में प्राकृत भाषा के योगदान का विश्लेषण। |
| 2. | • प्राकृतव्याकरणस्य आधारभूतशब्दरूपप्रक्रियाया: अवबोध:।<br>• प्राकृतभाषाकौशलाभिवर्धनम्।<br>• प्राकृतव्याकरणस्य व्यापकरूपेण विश्लेषणक्षमताभिवर्धनम्।<br><br>• प्राकृत व्याकरण के आधारभूत शब्दरूपप्रक्रिया का अवबोध।<br>• प्राकृतभाषा कौशल अभिवर्धन।<br>• प्राकृतव्याकरण के व्यापकरूप में विश्लेषण क्षमता अभिवर्धन। |
| 3. | • जैनतीर्थंकरैतिह्य परिचय:।<br>• जैनतीर्थंकरयोगदानविवेचनम्।<br>• जैनतीर्थंकरपरम्पराया: विश्लेषणम्।<br><br>• जैनतीर्थंकरों के एतिह्य का परिचय।<br>• जैनतीर्थंकरों के योगदान विवेचन।<br>• जैनतीर्थंकरपरम्परा का विश्लेषण। |
| 4. | • जैनतत्वमीमांसाया: समीक्षा।<br>• जैनतत्वमीमांसाया: तर्कसम्मतव्याख्या।<br>• जैनतत्वमीमांसाया: विश्लेषणम्।<br><br>• जैनतत्वमीमांसा की समीक्षा। |

| | |
|---|---|
| | • जैनतत्वमीमांसा की तर्कसम्मतव्याख्या।<br>• जैनतत्वमीमांसा का विश्लेषण। |

## दशमपत्रम्- पालि भाषा एवं बौद्ध दर्शन

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • पालिव्याकरणस्य आधारभूतशब्दरूपप्रक्रियाया: अवबोध:।<br>• पालिभाषाकौशलाभिवर्धनम्।<br>• पालिव्याकरणस्य व्यापकरूपेण विश्लेषणक्षमताभिवर्धनम्।<br><br>• पालिव्याकरण के आधारभूत शब्दरूप प्रक्रिया का अवबोध।<br>• पालिभाषा कौशल का अभिवर्धन।<br>• पालिव्याकरण का व्यापकरूप से विश्लेषण क्षमता अभिवर्धनम्। |
| 2. | • बौद्धसिद्धान्तानां परिचय:।<br>• बौद्धसिद्धान्तानां परिभाषिकपदानां विश्लेषणम्।<br>• बौद्धसिद्धान्तानां तार्किकव्याख्या।<br><br>• बौद्धसिद्धान्तों का परिचय।<br>• बौद्धसिद्धान्तों के परिभाषिक पदों का विश्लेषण।<br>• बौद्धसिद्धान्तों की तार्किकव्याख्या। |
| 3. | • बौद्धमौलिकशिक्षाया: परिचय:।<br>• बौद्धमौलिकशिक्षाया: परिभाषिकपदानां विश्लेषणम्।<br>• बौद्धमौलिकशिक्षाया: तार्किकव्याख्या।<br><br>• बौद्धमौलिक शिक्षा का परिचय।<br>• बौद्धमौलिक शिक्षा के परिभाषिक पदों का विश्लेषण।<br>• बौद्धमौलिक शिक्षा की तार्किकव्याख्या |
| 4. | • बौद्धदर्शनविचाराणां विश्लेषणम्।<br>• पुनर्जन्म-एवं-कर्म सिद्धान्तविषयाणां प्रतिपादनम्।<br>• बौद्धदर्शनविचाराणाम् अनुशीलनम्। |

| | |
|---|---|
| | • बौद्धदर्शनविचारों का विश्लेषण।<br>• पुनर्जन्म-एवं-कर्म सिद्धान्त विषयों का प्रतिपादन।<br>• बौद्ध दर्शन विचारों का अनुशीलन। |

# एम.ए.हिन्दू-अध्ययनम् (तृतीयसत्रम्)

## एकादशपत्रम्- पुनर्जन्म-बन्धन-मोक्ष-विमर्श

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • जीव-अवधारणाया: अवबोध:।<br>• जीव-अवधारणाया: विश्लेषणम्।<br>• बन्धनं बन्धनप्रकाराणां च परिज्ञानम्।<br><br>• जीव-अवधारणा का अवबोध।<br>• जीव-अवधारणा का विश्लेषण।<br>• बन्धन एवं बन्धन प्रकारों का परिज्ञान। |
| 2. | • पुनर्जन्मसिद्धान्तस्य परिज्ञानम्।<br>• पुनर्जन्मनिमित्तं धर्मस्य हेतुनां परिचय:।<br>• प्रतीत्यसमुत्पादस्य अवबोध:।<br><br>• पुनर्जन्मसिद्धान्त का परिज्ञान।<br>• पुनर्जन्म निमित्त धर्म के हेतुओं का परिचय।<br>• प्रतीत्य समुत्पाद का अवबोध। |
| 3. | • पुनर्जन्मविषये उपनिषद्दृष्टेरवबोध:।<br>• पुनर्जन्मविषये दार्शनिकदृष्टे: परिचय:<br>• पुनर्जन्मविषये आधुनिकवैज्ञानिकचिन्तनस्य परिचय:<br><br>• पुनर्जन्म के विषय में उपनिषद् दृष्टि का अवबोध:।<br>• पुनर्जन्म के विषय में दार्शनिक दृष्टि का परिचय।<br>• पुनर्जन्म के विषय में आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन को परिचय। |
| 4. | • मोक्षस्य परिज्ञानम्<br>• दु:खनिवृत्ति हेतुनां परिचय:।<br>• मोक्षमार्गाणां विश्लेषणम्<br><br>• मोक्ष को परिज्ञान |

| | |
|---|---|
| | • दुःखनिवृत्ति हेतुओं का परिचय।<br>• मोक्षमार्ग का विश्लेषण। |

## द्वादशपत्रम्- रामायण

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • रामायणकथावस्तुपरिज्ञानम्।<br>• रामकथाया: वैदिकाधाराणाया: विश्लेषणम्।<br>• विदेशेषु विकसितविविधरामायणकथानां समीक्षा।<br><br>• रामायण की कथावस्तु का परिज्ञान।<br>• रामकथा की वैदिकाधारा का विश्लेषण।<br>• विदेशों में विकसित विविधरामायण कथाओं की समीक्षा। |
| 2. | • रामायणस्य लोकप्रियताया: प्रतिपादनम्।<br>• वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये रामायणस्य प्रासङ्गिकताया: विवेचनम्।<br>• रामायणाश्रितभारतीयसाहित्यस्य एवं कलानां व्याख्या।<br><br>• रामायण की लोकप्रियता का प्रतिपादन।<br>• वर्तमानपरिप्रेक्ष्य में रामायण की प्रासङ्गिकता का विवेचन।<br>• रामायणाश्रित भारतीयसाहित्य एवं कलाओं की व्याख्या। |
| 3. | • मर्यादापुरुषोत्तमश्रीरामस्य जीवनानुकरणम्।<br>• रामायणे मानवप्रकृतिसम्बधानां मूल्याङ्कनम्।<br>• अधीतविषयाधारेण श्रीरामचरित्रस्य तर्कसम्मतव्याख्या।<br><br>• मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन अनुकरण।<br>• रामायण में मानवप्रकृति सम्बन्ध का मूल्याङ्कन।<br>• अधीत विषयों के आधार पर श्रीराम के चरित्र की तर्कसम्मत व्याख्या। |

| | |
|---|---|
| 4. | • समाजनिर्माणे ऋषिणां भूमिकाया: विवेचनम्।<br>• रामायणकालीननारीस्तिथे: विवेचनम्।<br>• रामायणकालीनवर्तमाननारीस्तिथे: तुलनात्मकं मूल्याङ्कनम्।<br><br>• समाजनिर्माण में ऋषियों की भूमिका का विवेचन।<br>• रामायणकालीन नारी की स्थिति का विवेचन।<br>• रामायणकालीन एवं वर्तमान नारी स्थिति का तुलनात्मक मूल्याङ्कन। |

## त्रयोदशपत्रम्- भारतीय नीतिशास्त्र

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • आचारशास्त्रैतिह्यबोध:।<br>• आचारशास्त्रस्वरूपपरिज्ञानम्।<br>• आचारशास्त्रस्य विश्लेषणम्।<br><br>• आचारशास्त्र के ऐतिह्य का बोध।<br>• आचारशास्त्र के स्वरूप का परिज्ञान।<br>• आचारशास्त्र का विश्लेषण। |
| 2. | • नैतिकशिक्षाया: विविधरूपाणां परिज्ञानम्।<br>• सनातनधर्मस्य आधारभूतनैतिकसिद्धान्तानां अवबोध: ।<br>• सनातनधर्मस्य आधारभूतनैतिकसिद्धान्तानां अनुपालनम् ।<br><br>• नैतिक शिक्षा के विविध रूपों का परिज्ञान।<br>• सनातनधर्म के आधारभूत नैतिकसिद्धान्तों का अवबोध ।<br>• सनातनधर्म के आधारभूत नैतिकसिद्धान्तों का अनुपालनम् |
| 3. | • मानवमूल्याधारितनैतिकचेतनाया: विकास:।<br>• मौलिकनैतिकसम्प्रत्ययानां चिन्तनम्।<br>• नैतिकनिर्णयक्षमता। |

| | |
|---|---|
| | • मानवमूल्य आधारित नैतिकचेतना का विकास।<br>• मौलिक एवं नैतिक सम्प्रत्ययों का चिन्तन।<br>• नैतिक निर्णय क्षमता। |
| 4. | • भारतीयनीतिशास्त्रस्य मुख्यसम्प्रत्ययानां विवेचनम्।<br>• ऋणस्य अवधारणाया: विश्लेषणम्।<br>• अनुप्रयोगात्मकाचारपद्धतिविषयकचिन्तनम् ।<br><br>• भारतीय नीतिशास्त्र के मुख्य सम्प्रत्ययों का विवेचन।<br>• ऋण की अवधारणा का विश्लेषण।<br>• अनुप्रयोगात्मक आचारपद्धति विषयक चिन्तन । |

## चतुर्दशपत्रम्-नाट्य

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • भरतमुने: नाट्यशास्त्रस्य परिचय: ।<br>• नाट्यस्य उद्भवस्य विकासस्य च अवबोध: ।<br>• प्रेक्षागृहस्य व्याख्या ।<br>•<br>• भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से परिचय ।<br>• नाट्य के उद्भव एवं विकास का अवबोध।<br>• प्रेक्षागृह की व्याख्या । |
| 2. | • संस्कृतनाटकानां प्राथमिकतत्त्वानां निरुपणम् ।<br>• रसभावाभिनयादीनां वर्गीकरणम् ।<br>• अभिनयसम्बन्धीपक्षाणां विमर्श: ।<br><br>• संस्कृतनाटकों के प्राथमिक तत्त्वों का निरुपण।<br>• रस, भाव, अभिनय आदि का वर्गीकरण ।<br>• अभिनय सम्बन्धी पक्षों पर विमर्श । |
| 3. | • दशरूपकाष्टादशरूपकाणाम् आलोचना ।<br>• अभिनयसम्बद्धलोकोपयोगी विषयाणां विवेचना।<br>• नाट्यसम्बद्धविधीनं वैश्विकपरिप्रेक्ष्ये मूल्याङ्कनम्।<br><br>• दशरूपक के अष्टादशरूपकों की आलोचना ।<br>• अभिनय सम्बद्ध लोकोपयोगी विषयों का विवेचन। |

| | |
|---|---|
| | • नाट्य सम्बद्ध विधीयों का वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मूल्याङ्कन। |
| 4. | • संस्कृतनाटकस्य संक्षिप्तेतिवृतस्य प्रस्तुतिकरणम्।<br>• भारतीयलोकरङ्गमञ्चपरम्पराया: परिज्ञानम्।<br>• भारतीयलोकरङ्गमञ्चपरम्पराया: उपस्थापनम्।<br><br>• संस्कृतनाटक के संक्षिप्त इतिवृत का प्रस्तुतिकरण।<br>• भारतीय लोकरङ्गमञ्च परम्परा का परिज्ञान।<br>• भारतीय लोकरङ्गमञ्च परम्परा का उपस्थापन। |

## पञ्चदशपत्रम्-पुराणपरिचय

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • पुराणोपुराणपरिचयः।<br>• पुराणलक्षणानामेहासिकमहत्त्वस्य अवबोध: तेषां विवेचना च।<br>• पौराणिककालस्थिते: परिज्ञानम्।<br><br>• पुराण एवं उपपुराण का परिचय।<br>• पुराणलक्षण के ऐहासिक महत्त्व का अवबोध एवं उसकी विवेचना।<br>• पौराणिक कालस्थिति का परिज्ञान। |
| 2. | • पौराणिकसंस्कृते: विवेचना ।<br>• पौराणिकसंस्कृते: दैनिकजीवने अभ्यास:।<br>• पौराणिकसंस्कृतिम् आश्रित्य वर्तमानसंस्कृते: मूल्याङ्कनम्।<br><br>• पौराणिक संस्कृति का विवेचना ।<br>• पौराणिक संस्कृति का दैनिक जीवन में अभ्यास।<br>• पौराणिक संस्कृति को आश्रित कर वर्तमान संस्कृति का मूल्याङ्कन। |
| 3. | • पुराणेषु वर्णितभारतीयविषयाणां परिज्ञानम्।<br>• आख्यानोपाख्यानयो: मध्ये अन्तरस्पष्टीकरणस्य क्षमता। |

| | |
|---|---|
| | • पौराणिकऋषिऋषिकाणां परिचय: ।<br><br>• पुराणों में वर्णित भारतीय विषयों का परिज्ञान।<br>• आख्यान उपाख्यान के मध्य अन्तर स्पष्टीकरण की क्षमता।<br>• पौराणिक ऋषियों एवं ऋषिकाओं का परिचय। |
| 4. | • पुराणेषु वर्णितानां केषाञ्चित् पात्राणां चरित्रविश्लेषणम्।<br>• भारतीयसंस्कृतौ विख्याततीर्थस्थालानां परिज्ञानम्।<br>• भारतीयपौराणिकसंस्कृते: वैशिष्टस्य विवेचनम्।<br><br>• पुराणे में वर्णित कतिचन पात्रों का चरित्र विश्लेषण।<br>• भारतीय संस्कृति में विख्यात तीर्थस्थालों का परिज्ञान।<br>• भारतीय पौराणिक संस्कृति के वैशिष्ट का विवेचनम्। |

# चतुर्थसत्रम्

## षोडशपत्रम्-महाभारत

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • महाभारतस्य रचनाकालस्य परिज्ञानम्<br>• महाभारतस्य मूलकथावस्तुविश्लेषणम् ।<br>• महाभारतस्य विविधसंस्करणानां तार्किकसमीक्षा ।<br><br>• महाभारत की रचना काल का ज्ञान।<br>• महाभारत के मूल कथानक का विश्लेषण।<br>• महाभारत के विभिन्न संस्करणों की तार्किक समीक्षा। |
| 2. | • धर्मशब्दस्यस्य सटीकविवेचनम्।<br>• धर्मलक्षणानां उदाहरणसहितं व्याख्या।<br>• वर्तमाने व्याप्तधर्मपदस्य महाभारते उल्लेखितधर्मपदस्य तुलनात्मकम् अध्ययनम्।<br><br>• धर्म शब्द की सटीक व्याख्या।<br>• उदाहरण सहित धार्मिक लक्षणों की व्याख्या। |

| | |
|---|---|
| | • वर्तमान में व्यापक धर्मपद का महाभारत में वर्णित धर्मपद से तुलनात्मक अध्ययन। |
| 3. | • भारतस्य भौगौलिकराजनैतिकसीमानां परिज्ञानम्।<br>• साहित्यकलासंस्कृति इत्यनयो: उपजीव्यरूपेण महाभारतस्य समीक्षा।<br>• महाभारतस्य विभिन्नसाहित्यिकमहत्त्वानां विश्लेषणम्।<br><br>• भारत की भौगौलिक एवं राजनैतिक सीमाओं का परिज्ञान।<br>• साहित्य, कला और संस्कृति के अस्तित्व के रूप में महाभारत की समीक्षा।<br>• महाभारत के विभिन्न साहित्यिक महत्वों का विश्लेषण। |
| 4. | • विदुरनीते: श्रीमद्भगवद्गीताया: च परिज्ञानम्।<br>• राजनीतिशासनसम्बद्धविषयाणां तार्किकसमीक्षा।<br>• महाभारते स्त्रीविमर्श:।<br><br>• विदुर नीति और श्रीमद्भगवदगीता का परिज्ञान।<br>• राजनीति एवं शासन से संबंधित मुद्दों की तार्किक समीक्षा।<br>• महाभारत में स्त्री विषयक विमर्श। |

## सप्तदशपत्रम्- विमर्श की पाश्चात्य प्रविधि

| इकाई | अधिगम परिणाम |
|---|---|
| | • पाश्चात्यशोधविमर्शस्य परिचय: ।<br>• पारम्परिकान्वेषणप्रविधीनां परिचय:।<br>• रीतिवादस्य नवसमीक्षावादस्य च व्याख्या ।<br><br>• पाश्चात्य शोध विमर्शका परिचय।<br>• पारंपरिक अन्वेषण तकनीकों का परिचय।<br>• रीतिवाद और नव-समीक्षावाद की व्याख्या। |
| | • मार्क्सवादस्य आर्थिकसिद्धान्तस्य तार्किकव्याख्या ।<br>• समीक्षावादीचिन्तनस्य विश्लेषणम्।<br>• यूरोपे वामपंथीचिन्तनस्योदय: |

| | |
|---|---|
| | अन्तोनियोग्राम्श्याधिपत्यसिद्धान्तानां विश्लेषणम्।<br><br>• मार्क्सवाद के आर्थिक सिद्धांत की तार्किक व्याख्या।<br>• समीक्षावादी चिन्तन का विश्लेषण।<br>• यूरोप में वामपंथी विचारधारा का उदय: अन्तोनियो ग्राम्शी के आधिपत्य के सिद्धांतों का विश्लेषण। |
| | • फर्डिनेंड डी सॉसर एवं च क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस भाषाविज्ञानस्य सिद्धान्तानां व्याख्या।<br>• जॉक देरिदा इत्यस्य विखण्डनवादसिद्धान्स्य व्याख्या।<br>• सिग्मंड फ्रायड, युन्गीन और लाकनियन एतेषां प्राच्यमनोवैज्ञानिकसिद्धान्तानां विश्लेषणम्।<br>• रेने देकार्त विज्ञानस्य संज्ञानस्य च सिद्धान्तानां व्याख्या।<br><br>• फर्डिनेंड डी सॉसर और क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस के भाषा विज्ञान के सिद्धांतों की व्याख्या।<br>• जॉक देरिदा के विखंडनवाद सिद्धांत की व्याख्या।<br>• सिगमंड फ्रायड, युन्गीन और लाकनियन के प्राच्य मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का विश्लेषण।<br>• रेने देकार्त विज्ञान और संज्ञान के सिद्धांतों की व्याख्या। |
| | • इतिहासवादस्य सिद्धान्तानां एवं मूल्यपरकान्वेषणस्य व्याख्या<br>• नृजातीयाध्ययनं, लैङ्गिकाध्ययनं, उत्तराधुनिकता फेनोमेनोलॉजी एतासामवधारणानां व्याख्या।<br>• भारतीयज्ञानतन्त्रस्य एवं अन्वेषणस्य प्रविधीनामुपयोग: विश्लेषणञ्च ।<br><br>• इतिहासवाद एवं मूल्यपरका अन्वेषण के सिद्धांतों की व्याख्या<br>• नृजातीय अध्ययन, लैङ्गिक अध्ययन और फेनोमेनोलॉजी अवधारणाओं की व्याख्या।<br>• भारतीय ज्ञान प्रणालियों और अन्वेषण तकनीकों का उपयोग और विश्लेषण। |

# अष्टादशपत्रम्- भारतीय स्थापत्य

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • भारतीयस्थापत्यस्य उद्भवविकासयो: परिचय: ।<br>• देवालयानां देवप्रतिमानां च आगम दृष्ट्याविश्लेषणम्।<br>• भारतीयस्थापत्यस्य साहित्यिकपुरातात्त्विकसन्दर्भानां समीक्षा।<br><br>• भारतीय स्थापत्य कला की उत्पत्ति एवं विकास का परिचय।<br>• आगम के दृष्टिकोण से मंदिरों और देवताओं की प्रतिमाओं का विश्लेषण।<br>• भारतीय स्थापत्यकला के साहित्यिक और पुरातात्विक संदर्भों की समीक्षा। |
| 2. | • वैदिकसाहित्ये वर्णितस्थापत्यस्य अवबोध: ।<br>• वास्तुपरुषावधारणाया: स्पष्टता।<br>• पुरातात्त्विकसंरचनाधारेण भारतीयसभ्यतानां विश्लेषणम्।<br><br>• वैदिक साहित्य में वर्णित वास्तुकला का अवबोध।<br>• वास्तुपरुष की अवधारणा की स्पष्टता।<br>• पुरातात्विक संरचनाओं के आधार पर भारतीय सभ्यताओं का विश्लेषण। |
| 3. | • मन्दिरस्थापत्यस्य उद्गमस्य विकासस्य च शास्त्रीयस्वरुपस्य अवगनम् ।<br>• मन्दिरस्थापत्यस्य मुख्यशैलीनाम् अवबोध: ।<br>• गुप्तकालीनमन्दिराणां वैशिष्ट्यस्य प्रस्तुतिकरणम्।<br><br>• मंदिर स्थापत्यकला की उत्पत्ति और विकास की शास्त्रीय प्रकृति का अवगमन।<br>• मंदिर स्थापत्यस्य कला की मुख्य शैलियों की अवबोध।<br>• गुप्तकालीन मन्दिरों के वैशिष्ट्य का प्रस्तुतिकरण। |
| 4. | • उत्तरभारतस्य दक्षिणभारतस्य च मन्दिराणां स्थापत्यभेद:।<br>• आश्रमविद्यास्थानधर्मशालावासादिनां स्थापत्यदृष्ट्या |

| | |
|---|---|
| | शास्त्रीयस्वरुपस्य स्पष्टीकरणम्।<br>• मन्दिराणां स्थापत्यविश्लेषणम्।<br><br>• उत्तर भारत और दक्षिण भारत के मंदिरों के बीच स्थापत्य में अंतर।<br>• वास्तुशिल्प की दृष्टि से आश्रमों, विद्यालयों, धर्मशालाओं, आवासों आदि के शास्त्रीय स्वरूप का विवेचन।<br>• मंदिरों का स्थापत्य विश्लेषण। |

## नवदशपत्रम्- पाणिनीय एवं पाश्चात्य भाषाविज्ञान

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • पूर्वपाणिनिभाषाविज्ञानस्य परिज्ञानम्।<br>• पूर्वपाणिनिव्याकरणस्य परिज्ञानम्।<br>• व्याकरणस्य विविधसम्प्रदायानां स्पष्टता।<br><br>• पूर्व पाणिनी भाषाविज्ञान का ज्ञान।<br>• पूर्व पाणिनी व्याकरण का ज्ञान।<br>• व्याकरण के विविध सम्प्रदायों की स्पष्टता। |
| 2. | • पाणिनीयव्याकरणांशानां अनुप्रयोगक्षमता ।<br>• पाणिनीयव्याकरणांशानां नियमानां प्रकाराणां च विश्लेषणम् ।<br>• अपेक्षितव्याकरणांशानां प्रयोगेण शब्दनिर्माणकौशलम् ।<br><br>• पाणिनि व्याकरण अंशों को लागू करने की क्षमता।<br>• पाणिनि व्याकरण अंशों के नियमों एवं प्रकारों का विश्लेषण।<br>• अपेक्षित व्याकरण अंशों का उपयोग करके शब्द निर्माण में कौशल। |
| 3. | • वृतिशाब्दबोधावधारणाया: स्पष्टता ।<br>• वृतिशाब्दबोधावधारणाया: विश्लेषणम् ।<br>• अपेक्षितवृतिशाब्दबोधावधारणानां प्रयोगेण वाक्यसंरचनाकौशलम् ।<br><br>• वृतिशाब्दबोध अवधारणा की स्पष्टता। |

| | |
|---|---|
| | • वृतिशाब्दबोध की अवधारणा का विश्लेषण।<br>• अपेक्षित वृत्ति, वृतिशाब्दबोध अवधारणाओं का उपयोग करके वाक्य संरचना कौशल। |
| 4. | • पाश्चात्यभाषाविज्ञानस्य परिज्ञानम्।<br>• पाश्चात्यजगतिपाणिने: प्रभावस्य मूल्याङ्कनम्।<br>• पाश्चात्यभाषाविज्ञान एवं पाणिनीयभाषाविज्ञानस्य तुलनात्मकम् प्रस्तुतिकरणम्।<br><br>• पश्चिमी भाषाविज्ञान का परिज्ञान।<br>• पाश्चात्य जगतमें पाणिनि के प्रभाव का मूल्याङ्कन।<br>• पाश्चात्य भाषाविज्ञान और पाणिनियन भाषाविज्ञान की तुलनात्मक प्रस्तुतिकरण। |

## विंशतिपत्रम्- भारतीयकला

| इकाई | अधिगमपरिणाम: |
|---|---|
| 1. | • भारतीयचिन्तनकलाया: परिज्ञानम्।<br>• भारतीयकालाया: अध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिकस्वरूपस्य विश्लेषणम्।<br>• सौन्दर्यस्य भारतीयावधारणा स्पष्टता।<br><br>• भारतीय चिंतन कला का परिज्ञान।<br>• भारतीय कला की आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक प्रकृति का विश्लेषण।<br>• सौंदर्य की भारतीय अवधारणा की स्पष्टता। |
| 2. | • भारतीयशास्त्रोक्तकलानां वास्तविकपरिज्ञानम्।<br>• भारतीयशास्त्रोक्तकलानां अनुप्रयोग: ।<br>• भारतीयशास्त्रोक्तकलानां वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये समायोजनम्।<br><br>• भारतीय धर्मग्रन्थों में वर्णित कलाओं का वास्तविक ज्ञान।<br>• भारतीय ग्रंथों में वर्णित कलाओं का अनुप्रयोग ।<br>• भारतीय शास्त्रों में वर्णित कलाओं का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समायोजन। |

| | |
|---|---|
| 3. | • औपनिषदिकलानां अवबोध: ।<br>• औपनिषदिकलानां अनुप्रयोग: ।<br>• औपनिषदिकलानां वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये समायोजनम्।<br><br>• औपनिषदिकलाओं का अवबोध<br>• औपनिषदिकलाओं का अनुप्रयोग ।<br>• औपनिषदिकलाओं का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समायोजन। |
| 4. | • भारतीयस्थापत्य एवं मूर्तिकलाया: अवधारणानां अवबोध:।<br>• भारतीयस्थापत्य एवं मूर्तिकलाया: अवधारणानां विश्लेषणम्।<br>• कलाया: अगमिकस्वरूपस्य परिज्ञानम्<br><br>• भारतीय वास्तुकला और मूर्तिकला की अवधारणाओं का अवबोध।<br>• भारतीय वास्तुकला और मूर्तिकला की अवधारणाओं का विश्लेषण।<br>• कला के अगमिक स्वरूप का परिज्ञान |